RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 23 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 19 अगस्त, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 23, 16-19 अगस्त 2018 तदनुसार 3 भद्रपद, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मृत्यु सब पर सवार है

लेo–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम्।
तस्मात्त्वां मृत्योर्गोपतेरुद्धरामि स मा बिभेः।।

–अथर्व० ८।२।२३

शब्दार्थ–**द्विपदाम्** = दोपायों पर **मृत्युः** = मृत्यु **ईशे** = शासन करता है और **मृत्युः** = मृत्यु ही **चतुष्पदाम्** = चौपायों पर **ईशे** = शासन करता है। **तस्मात्** = उस **गोपतेः** = गोपति **मृत्योः** = मृत्यु से **त्वाम्** = तुझको **उद्धरामि** = ऊपर उठाता हूँ, उद्धार करता हूँ, बचाता हूँ, **सः** = ऐसा तू **मा** = मत **बिभेः** = डर।

व्याख्या–'द्विपात् और चतुष्पात्' उपलक्षण हैं प्राणिमात्र के। क्या महाविद्यावान् और क्या ज्ञानशून्य, क्या बलवान् और क्या अबल, मृत्यु इन सबसे प्रबल है। पूर्वार्ध में इस सर्वजनप्रत्यक्ष सत्य का निरूपण करके वेद कहता है–'**तस्मात्त्वां मृत्योर्गोपतेरुद्भरामि स मा बिभेः** = तू मत डर, तुझे उस गोपति मृत्यु से छुड़ाता हूँ।

वेद की यह निराली शैली है कि एक लघु–से सङ्केत से महान् अर्थ का बोध करा देता है, पूर्वार्ध में बताया–**मत्युरीशे** = मृत्यु शासन करता है, अर्थात् सबका शासक है। मृत्यु का शासन यहाँ से प्रयाण में ही प्रतीत होता है। इससे मनुष्य डर गया है। उसे सर्वोच्छेद का भय सताने लगा है। शरीर के साथ क्या आत्मा का भी नाश हो जाएगा ? चूँकि वह अविद्या के कारण आत्मा और शरीर में अभेद–सा मान रहा है, अतः मृत्युभय से विह्वल हो उठता है। उसे वेद ने बताया, निःसन्देह मृत्यु शासक है, दोपायों, चौपायों, सभी प्राणियों पर उसका शासन चलता है, किन्तु वास्तव में वह केवल **गोपति** है। उसका शासन इन्द्रियों पर है, शरीर पर है अर्थात् आत्मा पर मृत्यु का अधिकार नहीं है, आत्मा अजर–अमर है। वेदोपदेशक कहता है, तू डर मत, तू चाहे तो मैं तुझे इस गोपति मृत्यु से बचा सकता हूँ। इसी से अथर्ववेद [८।२।२] में कहा है–'**अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि**' = अशस्ति रूपी मृत्युपाशों को छुड़ाता हुआ तुझे अत्यन्त दीर्घ आयु देता हूँ, अर्थात् शरीर वियोग मृत्यु नहीं। मृत्यु तो अशस्ति = निन्दित आचरण है। इसको छोड़ दो, फिर मृत्युपाश= मौत के फन्दे टूट जाएँगे। तभी तो भगवान् ने कहा–

सोऽरिष्ट न मरिष्यसि न मरिष्यसि मा बिभेः।
न वै तत्र म्रियन्ते नो यन्त्यधमं तमः।।
सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः।
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम्।।

–अथर्व० ८।२।२४-२५

हे अहिंसित ! तू मत डर, तू नहीं मरेगा। वहाँ नहीं मरते और ना ही नीच= घोर अन्धकार को प्राप्त करते हैं, प्रत्युत वहाँ गौ, अश्व, पुरुष, पशु सभी जीते हैं, जहाँ यह आनन्ददायक ब्रह्म जीवन के लिए परिधि बना लिया जाता है। अशस्ति से छूटने का साधन है ब्रह्म को अपना घेरा बना लेना। वेद में कहा है–'**ब्रह्मास्मै वर्म कृण्मसि**' [अथर्व० ८।२।१०] = इस अशस्तिरूप मृत्यु से डरने वाले के लिए हम ब्रह्म को कवच बना देते हैं। ब्रह्म–कवच पर अशस्ति वार ही नहीं कर सकती। जीवन की इच्छा है, तो हृदय से कह–'**ब्रह्म वर्म ममान्तरम्**' [ऋ० ६।७५।१९] = ब्रह्म मेरा अन्दर का कवच है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।
शं नः इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः।।

–ऋ० १.९०.९

भावार्थ–मित्र, वरुण, अर्यमा, इन्द्र, बृहस्पति, विष्णु आदि परमात्मा के अनन्त नाम हैं, ये सब सार्थक हैं निरर्थक एक भी नहीं। अनन्त शक्ति, अनन्त गुण और अनन्त ही ज्ञान वाले जगत्पिता में जगत् का उत्पन्न करना, अपने सब भक्तों को ज्ञान और शान्ति देकर, उनका लोक परलोक सुधारना इत्यादि सब घट सकते हैं।

इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवः स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वः स्तेन ईशत माऽघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।

–ऋ० १.१

भावार्थ–हे परमेश्वर ! अन्न और बलादिकों की प्राप्ति के लिए आपकी प्रार्थना उपासना करते हुए आपका ही हम आश्रय लेते हैं। परम दयालु प्रभु, जीव को कहते हैं कि हे जीव ! तुम वायुरूप हो। प्राणरूपी वायु से ही तुम्हारा जीवन बन रहा है। तुमको मैं जगत्कर्ता देव, शुभ कर्मों के करने के लिए प्रेरणा करता हूँ, यज्ञादि उत्तम कर्मकर्ताओं के लिए श्रेष्ठ गौओं का संग्रह करना आवश्यक है। प्रभु से प्रार्थना है कि हे ईश्वर ! यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करने वाले यजमान के गौ आदि पशुओं की रक्षा करें।

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव।।

–यजु० ३६.२०

भावार्थ–हे दयामय परमात्मन्! आप अपने भक्तों के पापों और कष्टों को दूर करने वाले, अर्थात् पापों से बचाते हुए उनके अन्तःकरण को पवित्र और तेजस्वी बनाने वाले हैं, आप भक्तवत्सल भगवान् को हमारा प्रणाम हो। हे दयामय जगदीश ! ऐसा समय कभी न आवे की हम आपकी आज्ञा के विरुद्ध चलकर, आपकी कृपा के पात्र बनते हुए, सुख और कल्याण के भागी बनें।

26 अगस्त पर विशेष

संस्कृत दिवस-एक पावन पर्व

ले.-डा. निर्मल कौशिक 163, आदर्श नगर ओल्ड कैंट रोड फरीदकोट (पंजाब)

सर्व विदित है कि संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी है। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रन्थ, पुराण सभी संस्कृत भाषा में ही रचे गए है। इनका विषय भी बहुत विस्तृत और गहन है। वेदों के विषय में कहा गया है। ''वेदा: सर्व विद्यानाम् निधानं खलु। अर्थात् वेद सभी विद्याओं के भण्डार है। संस्कृत भाषा में ही हमारे आयुर्वेद ज्योतिष, दर्शन और व्याकरण के ग्रन्थ रचे गए हैं। वेदों को सभी धर्मों का मूल भी कहा गया है। ''वेदोऽखिलो धर्म मूलम् सर्व ज्ञानमयो हि स:''।। महर्षि वाल्मीकि और महर्षि व्यास जी ने 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे विश्व विख्यात अमर ग्रन्थ 'संस्कृत भाषा में ही रचे। कालिदास, अश्वघोष भवभूति, दण्डी, माघ, जगन्नाथ, विश्वनाथ जैसे विद्वानों ने अपने ग्रन्थ संस्कृत भाषा में रच कर अमर साहित्य विश्व को दिया। 'श्रीमद्भगवद् गीता' को तो वेदों के समान ही विश्व साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में जाना जाने लगा है। इन ग्रन्थों के महत्त्व के साथ साथ विश्व में संस्कृत भाषा का गौरव भी बढ़ा है। विदेशों में लोग संस्कृत भाषा के अध्ययन में रुचि लेने लगे हैं।

संस्कृत भाषा एक विज्ञान सम्मत एवं सम्पन्न भाषा है। ''संस्कृते संस्कृति'' संस्कृत भाषा से ही भारतीय संस्कृति को जाना जा सकता है। समृद्ध संस्कृति के रूप में भारतीय परम्पराओं, सिद्धान्तों, जीवन दर्शन और कलाओं को विश्वभर में सम्मान मिला है। वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वे भवन्तु सुखिन:, अहिंसा परमो धर्म: जैसे आदर्शों के कारण ही भारतीय संस्कृति विश्वसंस्कृति में सर्वोपरि है। संस्कृत भाषा में रचे गए वेद, उपनिषद, दर्शन शास्त्र पुराण आदि ग्रन्थ हमारी अमीर विरासत है। संस्कृत भाषा में रचित साहित्य विश्व भर में अतुलनीय और अमूल्य साहित्य की श्रेणी में आता है। संस्कृत भाषा को अत्यन्त वैज्ञानिक और आधुनिक संगणक (कम्प्यूटर) के अत्यन्त उपयुक्त एवं अनुकूल भाषा कहा गया है। एक कवि के अनुसार

संस्कृते संस्कृतिर्ज्ञेया, संस्कृते सकलाकला:।।

संस्कृते सकलं ज्ञानं, संस्कृत किं न वर्तते।।

न तादृशे व्याकरणं, यादृश संस्कृत भाषायाम्

न चापि ताद्वशीलिपि,: यादृशी संस्कृत भाषायाम्

संस्कृते पदलालित्यम्, संस्कृते चार्थ गौरवम्

संस्कृते सकलं ज्ञानम्, संस्कृत किं न विद्यते।।

17वीं-18वीं शताब्दी तक भारत में संस्कृत भाषा के अध्ययन अध्यापन का प्रचलन चलता रहा। 19वीं-20वीं शताब्दी में अंग्रेजी भाषा के आकर्षण और प्रभाव के कारण संस्कृत भाषा गौण होती चली गई। फिर भी महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, मदन मोहन मालवीय, डॉ. राधाकृष्णन, लोक-मान्य तिलक जैसे महानुभावों ने इसके महत्त्व को समझा। स्वामी दयानन्द जी ने तो संस्कृत भाषा में अनेक विद्वानों से संस्कृत भाषा को समृद्ध बनाने के लिए शास्त्रार्थ भी किए। अनेक विदेशी विद्वानों ने भी इस भाषा के महत्त्व को समझा और इसे प्रोत्साहित किया। सन् 1783 में कलकत्ता में नियुक्त सर विलियम जान ब्रिटिश सुप्रीम जज ने कालिदास के रचित ग्रन्थ अभिज्ञान शाकुन्तलम् और ऋतुसंहार का अंग्रेजी अनुवाद किया। 1785 में सर चार्ल्स विलिकस ने श्रीमद्भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद भी किया। जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान मैक्समूलर ने 'हितोपदेश' की कथाओं का अंग्रेजी अनुवाद किया। उन्होंने तो अपना नाम भी संस्कृत में 'मोक्ष मुल्लर भट्ट' रख लिया था। इन्होंने कालिदास के 'मेघदूतम्' का अंग्रेजी अनुवाद भी किया। विदेशों में संस्कृत भाषा के महत्त्व को समझते हुए वहां पर अनेक संस्कृत के ग्रन्थों पर अब शोध कार्य भी होने लगे हैं। विश्वविद्यालयों और विद्यालयों में संस्कृत भाषा पढ़ाई भी जाने लगी है।

संस्कृत भाषा के महत्त्व को दर्शाने, इस भाषा के अस्तित्व को बनाए रखने के प्रयास के रूप में प्रतिवर्ष श्रावण-पूर्णिमा के अवसर पर संस्कृत भाषा के उत्थान हेतु अनेक आयोजन किए जाते है। भारत में ही नहीं विदेशों में भी अब इस संस्कृत दिवस के दिन अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। इसे महर्षि पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। ऋषियों ने ही वेदवाणी के रूप में संस्कृत भाषा में वेदों की रचना की थी। इसीलिए वेदवाणी को आर्ष काव्य भी कहा जाता है। इस भाषा के महत्त्व को दर्शाने हेतु संविधान की 22 भाषाओं में इसे भी सम्मिलित किया गया है। उत्तराखण्ड राज्य में इसे आधिकारिक भाषा घोषित किया गया है। भारतीय की अमूल्य निधि को संजोए रखने के लिए संस्कृत दिवस श्रावणी पूर्णिमा को इसलिए भी मनाया जाता है कि इस दिन रक्षा बन्धन का पावन पर्व भी होता है। संस्कृत साहित्य और भारतीय संस्कृति की रक्षा के संकल्प के रूप में भी इसे इस दिन मनाया जाता है।

सर्व प्रथम सन् 1969 में भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा इस श्रावणी पूर्णिमा के दिन संस्कृत दिवस को राज्य और केन्द्रीय स्तर पर 'संस्कृत दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था। अब विदेशों में भी संस्कृत भाषा का अध्ययन अध्यापन होने, लेखन, प्रकाशन तथा संस्कृत कार्यक्रमों के आयोजन के कारण इसे 'विश्व संस्कृत भाषा दिवस' के रूप में जाना जाता है।

श्रावणी पूर्णिमा को ही 'संस्कृत दिवस' के रूप में क्यों मनाया जाता है इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि प्राचीन गुरुकुल परम्परा में इसी दिन सत्र का प्रारम्भ होता था। श्रावण पूर्णिमा के दिन ही वेदपाठ आरम्भ होता था। इसी दिन वैदिक संस्कृत के ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन होता था। यह कार्यक्रम पौष पूर्णिमा तक चलता था। इसी परम्परा को निरन्तर जारी रखते हुए गुरुकुलों में आज भी श्रावण पूर्णिमा को ही पठन-पाठन का आरम्भ किया जाता है। संस्कृत व्याकरण वेद मन्त्रों का उच्चारण, संस्कृत के ग्रन्थों का अध्ययन जैसे पाठ्यक्रम इसी दिन आरम्भ किए जाते है। अत: श्रावणी पूर्णिमा को संस्कृत दिवस मनाने का निर्णय भारत सरकार द्वारा लिया गया। भारत में संस्कृत भाषा की अवस्था अत्यन्त दयनीय है। विदेशों में इसे प्रोत्साहित किया जा रहा है विदेशों में इस भाषा पर शोध कार्य हो रहे है वे लोग इसका लाभ ले रहे हैं। मगर हम भारतीय अंग्रेज़ी भाषा के वर्चस्व को बढ़ाने में लगे है। हमारा समृद्ध साहित्य दीमक की भेंट चढ़ रहा है। संस्कृत भाषा को या तो जटिल भाषा या फिर मृत भाषा कह कर जनसामान्य को इससे दूर किया जा रहा है। कुछ लोग तो इसे कर्मकाण्ड, ज्योतिष की भाषा कहकर इसे ब्राह्मणों की भाषा कहते भी सुने गए हैं। यह तो सुरभाषा, देवभाषा है और देवता जैसी प्रवृत्ति के लोग ही इसे पढ़ते और पढ़ाते हैं। वह भी समय था जब वैदिक काल में यह जनसामान्य की भाषा थी। इसी भाषा में शास्त्रार्थ होते थे। हाँ अब आशा की किरण जगी है 'संस्कृत भारती' और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जैसी संस्थाए इसके संवर्धन और संरक्षण हेतु-अध्ययन-अध्यापन: सम्भाषण के कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। मगर यह प्रयास पर्याप्त नहीं है। इसकी गति को तीव्र करने और क्षेत्र को विस्तृत करने की आवश्यकता है। प्रत्येक राज्य के विद्यालयों महाविद्यालयों में इसका पठन पाठन पुन: आरम्भ होना चाहिए। संस्कृत के सरलतम पाठयक्रम निर्धारित किए जाए। अध्यापकों का प्रशिक्षण नियमित रूप से होना चाहिए। अगर हमें अपनी संस्कृति और संस्कारों को सुरक्षित रखना है तो संस्कृत भाषा का अध्ययन अध्यापन पुन: प्रारम्भ करना होगा।

संस्कृत दिवस ही एक पुण्य अवसर है इस अवसर पर हमें संकल्प लेना होगा कि हम इस गौरवमयी संस्कृत भाषा के विस्तार और प्रसार हेतु सम्भव यथाशक्ति योगदान देंगे। संस्कृत विश्व-विद्यालयों को भी अपना कार्य क्षेत्र बढ़ाना होगा। शोध और बोध हेतु विद्यार्थियों की संख्या बढ़ानी होगी। मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करना होगा।

संस्कृत दिवस को लोकप्रिय और सार्थक बनाने हेतु विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर संस्कृत लेखन

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

शतपथ ब्राह्मण में स्वाध्याय के लाभ

पिछले लेख में स्वाध्याय का जीवन में क्या महत्व है तथा आर्य समाज के तीसरे नियम में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है, इस विषय पर चर्चा की गई थी। इस लेख में शतपथ ब्राह्मण में स्वाध्याय के जिन लाभों का वर्णन किया गया है उनका क्रमशः विवेचन किया जाएगा-

अथातः स्वाध्याय प्रशंसा। प्रिये स्वाध्याय-प्रवचने भवतो, युक्तमना भवति, अपराधीनोऽहरहरर्थान्साधयते, सुखं स्वपिति, परमचिकित्सक आत्मनो भवति, इन्द्रियसंयमश्चैकारामता च प्रज्ञावृद्धिर्यशो लोक-पक्तिः, प्रज्ञा वर्धमाना, चतुरो धर्मान् ब्राह्मणमभिनिष्पादयति। ब्राह्मण्यं, प्रतिरूपचर्या, यशो लोकपंक्ति लोकः पच्यमानश्चतुर्भिर्धर्मैर्ब्राह्मणं भुनक्ति, अर्चया च दानेन चाज्येयतया चावध्यतया च।

1. युक्तमना भवति-: स्वाध्याय के लाभों का वर्णन करते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य लिखते हैं कि स्वाध्याय से व्यक्ति युक्तमना होता है। मनुष्य की सबसे बड़ी कठिनाई है कि वह अपने मन को एकाग्र नहीं कर पाता। हर व्यक्ति कहता है कि मन वश में नहीं है। गीता में अर्जुन ने भी श्रीकृष्ण के समक्ष कहा था कि-

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढ़म्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।

हे श्रीकृष्ण! मन अत्यन्त चञ्चल है। इन्द्रियों को मथ देने वाला अत्यन्त बलवान् और दृढ़ है। उसका निग्रह वैसा ही दुष्कर है जिस प्रकार वायु का निग्रह। अर्थात् सब सफलताओं की सफलता, सब योगों का योग मनोनिग्रह है। शतपथकार ने स्वाध्याय के लाभों का वर्णन करते हुए लिखा कि स्वाध्याय करते हुए व्यक्ति युक्तमना भवति अर्थात् समाहित मन वाला हो जाता है, स्थिरचित्त हो जाता है। गीता में जिसे स्थितप्रज्ञ कहा है, उसे शतपथकार ने युक्तमना कहा है। वास्तव में प्रत्येक बात में युक्त होना ही योग है और ऐसा व्यक्ति ही योगी है। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि-

युक्ताहारविहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य, योगो भवति दुःखहा।।

युक्त आहार-विहार वाले का, कर्म में युक्त चेष्टाशील का, सोने जागने में युक्त व्यक्ति का योग ही समस्त दुःखों का हरने वाला होता है। इसलिए शतपथकार सब लाभों का लाभ, सब सिद्धियों की सिद्धि, सब सुखों का सुख युक्त मन को ही मानते हैं। जिसका मन अयुक्त है उसका तो कुछ भी नहीं है। गीता में कहा है-

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुतस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।

अयुक्त व्यक्ति की बुद्धि भी कार्य नहीं करती। व्यक्ति किसी भी संकल्प को पूरा करने का सामर्थ्य नहीं रखता। उसकी बुद्धि में हर समय द्वन्द लगा रहता है कि करूं न करूं। अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता। स्वाध्याय का कोई अन्य लाभ मिले न मिले, मन को युक्त करने का अभ्यास तो हो ही जाता है। इस प्रकार स्वाध्याय के द्वारा मन को वश में करने की आत्मिक शक्ति प्राप्त होती है।

2. अपराधीनो भवति-: स्वाध्याय के दूसरे लाभ का वर्णन करते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य लिखते हैं कि स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति किसी के आधीन होकर नहीं अपितु स्वाभिमान के साथ सिर उठाकर जीता है। स्वाध्याय का दूसरा लाभ यह होता है कि मनुष्य पराधीन नहीं रहता, स्वाधीन हो जाता है। वह किसी भी प्रकार की मानसिक व शारीरिक गुलामी को सहन नहीं कर सकता। स्वाध्यायेन एवं मनुष्यो जानाति को धर्मः कोऽधर्मः, किं पुण्यं किं पापम्, किं कृत्वा लाभो भविष्यति, केन कार्येण वा हानि। स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य का इतना तो विवेक हो ही जाता है कि धर्म का सही स्वरूप क्या है? अधर्म क्या है? पुण्य और पाप क्या है? कौन सा कार्य करने से अपने हित के साथ-साथ दूसरों का भी हित होगा और क्या करने से अपनी भी हानि और दूसरों की भी हानि होगी। स्वाध्यायशील व्यक्ति कभी भी अपनी इन्द्रियों का गुलाम नहीं होता, बल्कि उसकी इन्द्रियां हमेशा उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करती हैं।

इन्द्रियों को अपने अधीन रखने वाला मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता को प्राप्त करता है। इस प्रकार स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति इतना विवेकशील हो जाता है कि वह किसी भी प्रकार की मानसिक और शारीरिक दासता को स्वीकार नहीं करता है। इसलिए शतपथकार ने कहा कि स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति हमेशा उत्कर्ष को प्राप्त करता है। दासता स्वीकार करने पर मनुष्य का स्वाभिमान नष्ट हो जाता है, उसका आत्मविश्वास डगमगा जाता है और ऐसा व्यक्ति कभी भी उन्नति को प्राप्त नहीं कर सकता। वह जान लेता है कि-

सर्वं परवशं दुःखम्, सर्वात्मवशं सुखम्।।

अर्थात् परवश होना दुःख है और आत्मवश होना सुख है। जब हमारा देश पराधीन था उस समय भी क्रान्तिकारियों के मन में यही भाव उत्पन्न हुआ कि विदेशी राज्य की जगह स्वदेशी राज्य होना चाहिए जिसका वर्णन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में किया। महर्षि दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर और आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित होकर अनेकों क्रान्तिकारियों ने अपना बलिदान दिया। इसलिए संसार में कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो पराधीन रहना चाहता हो। पिंजरे में बन्द पक्षी भी आजाद होने के लिए प्रयत्न करता है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने इसी बात को प्रतिपादित किया है कि स्वाध्याय करने से मनुष्य को प्रेरणा मिलती है।

3. अहरहरर्थान् साधयते-: स्वाध्याय के लाभ बताते हुए महर्षि् याज्ञवल्क्य कहते हैं कि स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य अर्थलाभ को प्राप्त करता है। स्वाध्यायशील व्यक्ति आर्थिक उन्नति भी प्राप्त करता है। सभी प्रकार के भौतिक साधनों से सम्पन्न होता है। स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति छल, कपट, स्वार्थ से धन को प्राप्त नहीं करता अपितु पुरूषार्थ करते हुए, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को धारण करते हुए धन को प्राप्त करता है। शतपथकार के अनुसार अर्थ लाभ का अभिप्राय केवल भौतिक धन तक सीमित नहीं है अपितु स्वाध्याय करने वाले का सामर्थ्य इतना बढ़ जाता है कि वह शब्द की गहराई में जाकर उस अर्थ को निकाल लाता है जिसकी साधारण मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता। निरूक्तकार महर्षि यास्क ने अर्थ का महत्व दर्शाते हुए कहा कि वह व्यक्ति भवन के भार को ढोने वाले खम्भे के समान है, जो वेद को पढ़कर उसके अर्थ को नहीं जानता है। इसके विपरीत जो अर्थज्ञ है, वह समस्त कल्याणों का उपभोग करता है। महर्षि यास्क कहते हैं कि- योऽर्थज्ञ इत्सकलं भद्रमश्नुते।। अर्थात् जो अर्थ को जानने वाला है वही समस्त कल्याणों का उपभोग करता है। वह ज्ञान से सब प्रकार की मलिनता को धोकर सभी सुखों को प्राप्त करता है। इस प्रकार महर्षि याज्ञवल्क्य ने स्वाध्याय के लाभों में अर्थलाभ को भी महत्त्व दिया है और स्वाध्याय के द्वारा आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

नैतिकता की अवधारणा और शिक्षा में उसका उपयोग

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

नैतिकता का सामान्य अर्थ है नीति सम्मत आचरण का अपने में आधान करना। नीति का अर्थ है समाज में एक दूसरे से किया जाने वाला व्यवहार और उस व्यवहार को जिस ढंग से किया जाता है उसे ही नैतिक व्यवहार कहा जाता है। नीति शब्द णीञ् प्रापणे धातु में 'स्त्रिया क्तिन्' प्रत्यय के लगाने से सम्पन्न होता है। 'नीयते व्यवस्थाप्यते स्वेषु स्वेषु सदाचारेषु लोका: यया सा नीति:।'

अर्थात् जिसके द्वारा जनता को सदाचार में स्थापित किया जाता है और कुमार्ग से हटा कर सुमार्ग में लगाया जाता है उसी को नीति कहा जाता है। फिर नीति के अनुरूप जीवन यापन करना ही नैतिकता के नाम से जाना जाता है।

महाभारत शान्ति पर्व के अध्याय 57 के श्लोक 15 में कहा गया है–

'चातु वर्णस्य धर्मा श्चरक्षितव्या महीक्षिता।

धर्म संकर रक्षा च राज्ञां धर्म: सनातन:।।

राजा को चारों वर्णों के धर्मों की रक्षा करनी चाहिए। प्रजा को संकरता से बचाना राजाओं का सनातन धर्म है।

हमारे देश में लोग प्राचीन काल में धर्म और नीति आधारित जीवन जीते थे। तभी तो उस समय राजा अश्वपति ने वैश्वानर ब्रह्म के जिज्ञासु ऋषियों को अपने राज्य की नैतिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहा था, 'न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो नानाहिताग्निर्ना विद्वान् न स्वैरी स्वैरिणीकुत:।'

मेरे राज्य में न चोर हैं, न कृपण, न शराबी, न अग्निहोत्र न करने वाले हैं। न मूर्ख हैं, न व्यभिचारी फिर व्यभिचारिणी स्त्री कहां होगी?

हमारे देश के चरित्र की महिमा का वर्णन करते हुए मनु कहते हैं– एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:। स्वंस्वंचरित्रं शिक्षेरन्पृथियां सर्वमानवा:। मनु. 1139

हमारे देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों के सान्निध्य में पृथ्वी पर रहने वाले सब मनुष्य अपने-अपने आचरण की शिक्षा ग्रहण करें।

देश के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने वाले नेताओं ने भी आदर्श जीवन को अपनाया हुआ था। उस काल में लोग कहा कहते थे–'धन चला गया तो कोई बात नहीं, शरीर का स्वास्थ्य चला गया तो कुछ हानि हुई है और यदि चरित्र में कोई दोष आ गया तो मानो सब कुछ चला गया। धन की हानि की भरपाई पुन: पुरूषार्थ द्वारा की जा सकती है, स्वास्थ्य को भी नियमित जीवन और पौष्टिक आहार द्वारा पुन: प्राप्त किया जा सकता है परन्तु एक बार चरित्र के गिर जाने पर पुन: प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं की जा सकती है। परन्तु देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद धीरे-धीरे देश का चरित्र गिरता गया। चरित्र में सबसे अधिक गिरावट राजनेताओं, व्यापारियों तथा सरकारी सेवा में रत कर्मचारियों में पायी जाती है। इसी के फलस्वरूप मानव संसाधन में हमारा स्थान विश्व में 127 वें स्थान पर है। देश में भ्रष्टाचार, दुष्कर्म, हत्या, अपहरण और रिश्वत का बाजार गर्म है। विदेशों में अब इसे घृणा के साथ दुष्कर्म में लिप्त देश कहा जा रहा है। विदेशी स्त्रियां भारत की यात्रा करने से डरती हैं। भारत को घोटालों का देश भी कहा जाता है! संयुक्त परिवार प्रथा समाप्त प्राय: है। वृद्धों की सेवा के लिए वृद्धाश्रम खोले जाने लगे हैं।

देश के मननशील लोगों और शिक्षा शास्त्रियों ने इस समस्या का हल खोजने के लिए 11, 12 व 13 फरवरी 2012 को गांधी दर्शन भवन राजघाट नई दिल्ली पर उपनिषद आयोजित किया। इसमें लगभग 15 देशों के प्रतिष्ठित विचारकों और शिक्षा शास्त्रियों ने भाग लेकर नैतिक शिक्षा को शिक्षा में स्थान दिलाने के लिए प्रस्ताव स्वीकृत किया। भारत के मानव संसाधन विभाग का भी सहयोग रहा फिर 12 मई 2012 को देश के चुने हुए 51 शिक्षा शास्त्रियों और मानव संसाधन विभाग के उच्च पदस्थ व्यक्तियों के सान्निध्य में Indian Institute of public administration पर एक बैठक हुई। बैठक में नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम पर भी विचार हुआ। दोनों बैठकों का संचालन संस्कारम् के सम्पादक श्री ईश्वरदयाल जी ने किया। हर्ष की बात है कि सरकार ने भी सजगता दिखाई और फलस्वरूप केन्द्रीय विद्यालयों की कक्षाओं में नैतिक शिक्षा को स्थान मिल गया है। वर्तमान में देश की राजनीति में अपराधी व्यक्तियों का बोल बाला है। नौकरशाही और राजनेता देश को बेरहमी से लूट रहे हैं। व्यापारियों ने मिलावट के द्वारा देश के स्वास्थ्य को दांव पर लगा दिया है।

आओ। अब हम शास्त्रों को आधार बनाकर इस विषय पर चिन्तन करें। मानव जीवन का लक्ष्य है, यतोभ्युदय नि: श्रेयस सिद्धि सधर्म:। वैशोषिक दर्शन अर्थात् हमें इस जीवन में विकास के शीर्षस्थ स्थान पर पहुंचकर ही रूक नहीं जाना है वरन् मोक्ष की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम भी करना है। वास्तव में यह कार्य अत्याधिक कठिन भी है तभी तो सांख्य के आचार्य कहते हैं, 'अथ त्रिविध दु:ख अत्यन्त निवृत्ति अत्यन्त पुरूषार्थ। वैदिक ऋषियों ने इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए हमारे सामने दो समुच्चय प्रस्तुत किए हैं। पहला समुच्चय है ज्ञान, कर्म और उपासना तथा दूसरा समुच्चय है धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष। अब हम ज्ञान कर्म और उपासना पर चर्चा करते हैं। वेदों में ज्ञान के स्थान पर विद्या का बार-बार प्रयोग हुआ है। फिर विद्या के दो भाग कर दिये है अपरा और परा विद्या। अपरा विद्या वह है जिससे पृथ्वी और तृण से लेकर प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना। दूसरी परा विद्या वह जिससे सर्व शक्तिमान पर ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है। परा विद्या अपरा विद्या से अत्यन्त उत्तम है। वर्तमान काल में हम इस अपरा विद्या को ही शिक्षा के नाम से सम्बोधित करते हैं। यह अपरा विद्या अथवा शिक्षा ही हमें अभ्युदय के शीर्ष पर पहुंचाने का कार्य करती है। हमें इसे कर्म के साथ जोड़ना होता है और तभी यह हमें अभ्युदय प्राप्त कराती है।

अन्धं तम: प्रविशन्ति येऽविद्या मुपासते।

ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रता:।। यजु. 40.9

जो लोग अविद्या (कर्म काण्ड) का ही सम्पादन करते हैं वे अन्धकार में प्रवेश करते हैं और जो लोग विद्या में ही रत रहते हैं वे उससे भी अधिक अन्धकार को प्राप्त होते हैं।

विद्याञ्चाविद्या च यस्तद् वेदोभयंऽसह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यायामृतमश्नुते।। यजु. 40.11

जो ज्ञान और कर्म इन दोनों को साथ-साथ जानता है वह कर्म से मृत्यु को तैर कर ज्ञान से अमरता को प्राप्त होता है। इस प्रकार कर्म और ज्ञान के सम्मिलित प्रयोग से हम अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

नीति शास्त्र हमें वह शिक्षा देता है कि जिससे हमें सर्वदा सफलता ही प्राप्त होती है। नीति शास्त्र के क्रियात्मक स्वरूप को ही नैतिकता कहा जाता है। यदि शिक्षा के साथ नैतिकता जुड़ी हुई नहीं है तो हम उस शिक्षा से विशेष लाभ प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। उदाहरण स्वरूप जैसे हम जपते हैं–

'ओ३म् भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात्। यह गायत्री मंत्र यजुर्वेद में चार स्थानों पर आया है परन्तु केवल यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 में भू:, भुव: और स्व: का प्रयोग हुआ है। गायत्री मंत्र में यहां तीन व्याहृतियां इसलिए लगाई है कि हम परमात्मा से जो मांगने जा रहे हैं वह हमें अवश्य प्राप्त होवे। हम परमात्मा से पहले कहते हैं कि प्रभु आप हमारे (भू) एक मात्र आश्रय हैं, आधार है फिर कहते हैं कि प्रभु आप हमारे (भुव:) दु:ख विनाशक हैं। हम दु:खी होकर जब भी आपकी शरण में आए हैं तब आपकी कृपा से हमारे दु:ख दूर हो गए हैं, और फिर से भगवान। आप तो स्व: सुख स्वरूप अजन्मा अनादि हैं। हमने अब तक यह जो भूमिका बांधी है उसे नैतिकता कहा जाता है। इतना कहने के उपरान्त हम परमेश्वर से उसके तेज या ज्ञान प्रदान करने के प्रार्थना करते हैं, साथ ही उसे बता देते है आपके उस ज्ञान को हम अपने हृदय में धारण करेंगे, वह हमारी बुद्धि को पवित्र करेगा जिससे हमें श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्राप्त होगी। इसी प्रकार हम जहां भी शिक्षा के साथ नीति को जोड़ देंगे वहीं हमें सफलता प्राप्त होगी। नैतिक जीवन जीने का अर्थ है नीति शास्त्र सम्मत आचरण को जीवन में धारण करना।

(क्रमश:)

बलिदान देने वाले कुछ आर्य शहीदों का परिचय मात्र

ले.-पं. उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के दस नियम और उद्देश्य बनाकर संसार के सम्मुख एक सर्वोच्च आदर्श की स्थापना कर दी। छठे नियम में संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक, और सामाजिक उन्नति करना।

महर्षि दयानन्द जी इस युग के निर्माता और विधाता थे। वे आदित्य ब्रह्मचारी, ब्रह्मर्षि सब वेदांगों के प्रकाण्ड पंण्डित और महान विद्वान थे। आदर्श वक्ता, निर्भीक और महान लेखक थे। महाभारत के पश्चात इन पांच हजार वर्षों में उनके समान कोई महा-मानव नहीं हुआ। टूटी हुई ऋषियों की परम्परा को व प्राचीन गुरूओं की परम्परा को महर्षि दयानन्द जी ने पुनः जोड़ दिया। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। शिष्यों और सभी आर्य समाजियों को इस नियम के अनुसार आचरण करने की पवित्र शिक्षा दे गये। आर्य समाज के बैनर तले धर्म व राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपने अमूल्य प्राणों व जीवन की बलि चढ़ाकर बलिदान का द्वारा खोल दिया। आर्य समाज का इतिहास बलिदानों का इतिहास है। कोहाट के दंगे, मालावर का मोपला काण्ड नवाखली में मुसलमानों के अत्याचार और पाकिस्तान बनने पर 1947 के मुस्लिम गुटों के अत्याचारों की कहानी हजारों आर्य वीरों के बलिदान को आज कौन लिख सकता है।

इतिहास गवाह है महर्षि दयानन्द की प्रेरणा व आर्य समाज के बैनर तले अस्सी प्रतिशत आर्यों ने अपना बलिदान दिया था और परतन्त्र भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना महान योगदान दिया था। महर्षि दयानन्द जी कहते हैं, कि जो जितना गहराई से पिछला इतिहास पढ़ेगा उतना ही आगे इतिहास बनायेगा। पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित ग्रन्थ आर्य समाज के बलिदान में से कुछ बलिदानों का परिचय मात्र इस लेख में सुधी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं भारत सुधार में कुछ आर्य बलिदानियों की सूची

1. श्री दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी जन्म 1778 ई. दिवंगत 1868 ई।

2. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म 1824 ई. और बलिदान संवत 1940 वि.।

3. पं. गुरूदत्त विद्यार्थी का जन्म 1860 ई. मुल्तान ग्राम दिवंगत 19 मार्च 1890 ई.

4. पं. धर्मवीर पंडित लेख राम जी का जन्म 1915 संवत वि० बलिदान 6 मार्च 1897 ई.

5. स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म ग्राम जालन्धर तलवन सं० 1856 बलिदान 23 दिसम्बर 1926 ई.।

6. अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह जी का जन्म महरारोहतक खेड़ी सं० 1888 दिवगंत 1942 मुसलमानों की गोली से हुआ।

7. पूज्य पं० बस्तीराम जी का जन्म तिथी अज्ञात जिला गुरदासपुर, रूडा बलीदान सं० 1930 ई०

8. पंडित तुलसीराम जी का जन्म ति० अज्ञात स्थान जि० गुरदासपुर ग्राम रूडा में बलिदान सं० 1903 में

9. वीर रामचन्द्र जी का जन्म सं० 1953 जि० कठुआ हीरानगर वीरगति 1979 वि०।

10. महाशय राजपाल जी का जन्म सं० 1942 अमृतसर बलिदान 6 अप्रैल 1929 सं०।

11. सरदार धुन्ना सिंहजी का जन्म 1881 ई० खताला लुधियाना, समाज सुधार करते हुए विरोधियों की लाठियों से दिवंगत।

12. ला० लोरिन्दाराम जी का जन्म सन 1886 बन्नू बलिदान 6 नवम्बर सं० 1934।

13. विद्यासागर जी जन्म सं० 1975 सोई जि० जेहलम बलिदान 19-04-1939 ई०

14. हुतात्मा श्यामलाल जी का जन्म 1903 ई० भालकी हैदराबाद व बलिदान प्रचार करते हुए।

15. भाई वंशीलाल जी का जन्म जि० बदिर मणिंक नगर आपका बलिदान आर्ष शिक्षा पद्धति करते हुए।

16. हुतात्मा सुनहरा जी का जन्म जिला रोहतक ग्राम वुटाना में ओरंगाबाद सत्याग्रह के कारण मृत्यु हुई।

17. अमर शहीद परमानन्द जी का जन्म हरिद्वार बलिदान सत्याग्रह में 1-4-1939।

18. महाधन श्री फकीर चन्द जी का जन्म करनाल त० कैथल मेरधड़, मृत्यु 30 जून 1939।

19. ब्रह्मचारी दयानन्द जी का जन्म सं० 1919 हरदोई सुरसाग्राम बलिदान 9 मार्च 1940।

20. अमर शहीद श्री नन्हू सिंह जी का जन्म बुन्देलखण्ड-दिवंत 25-05-1939 ई० सं०।

21. लाला नन्द लाल जी का जन्म 1908 लाहौर बलिदान 15 नवम्बर 1927 सं०।

22. श्री शान्ति प्रकाश जी का जन्म संवत 1978 ग्रा० कालानौर गुरदासपुर दि० 27-03-1939 सं०।

23. चौ० मातुराम जी का जन्म संवत 1946 ग्राम मलिकपुर जि० हिसार-हैदराबाद सत्याग्रह दि० 28-07-1939।

24. भक्त अरूडामल जी जन्म 1910 में आर्य समाज में प्रवेश शरीरान्त 9 अगस्त 1939 सं०।

25. श्री रतिराम जी का जन्म ग्राम सावला जि० रोहतक-दिवंगत 25-08-1939 सं०।

26. श्री परमानन्द जी का जन्म 7 अप्रैल 1920 डेरागाजी खां बलिदान 26 मई 1944 सं०

27. साहूकार पालमल जी का जन्म ममटोट फिरोजाबाद दिवंगत मुसलमान द्वारा।

28. देवकीनन्दन जी जन्म जिला कैम्बलपुर मखड् ग्राम-मुसलमानों द्वारा बलिदान।

29. मुरली मनोहर जी का जन्म कन्दहार-बलिदन मुस्लिम पठानो द्वारा निमर्म हत्या।

30. बाबू नारायण सिंह जी जन्म सन 1868 पटना नगर धर्म की वेदी पर बलिदान।

31. श्री छोटेलाल जी का जन्म संवत 1961 में अलालपुर मेनपुरी, हैदराबाद सत्याग्रह से दिवंगत

32. बीरवर बदन सिंह जी का जन्म सन 1921 में सहारनपुर मुजफराबाद सत्याग्रह में दिवंगत 1939 ई०।

33. श्री ठाकुर मल्खान सिंह जी का जन्म रामपुर ग्राम रूडकी स्वतन्त्रता प्रेमी 1 जुलाई 1939 दिवंगत।

34. स्वामी कल्याणानन्द जी जन्म 1874 ई० मुजफरनगर वेदप्रचार करते हुए दिवंगत।

35. महाधन चौधरी ताराचन्द जन्म संवत 1973 ग्राम लूम्ब मेरठ-दिवंगत 2 सितम्बर 1939 ई०।

36. श्रीयुत अशर्फीलाल जी जन्म 18 वर्ष की आयु में हैदराबाद सत्याग्रह से 19 अगस्त 1939 ई०।

37. धर्मवीर श्री पुरूषोतम जी ज्ञानी जन्म 1867 ई० देहावसान 26 अगस्त 1939 ई०।

38. हुतात्मा वेद प्रकाश जी जन्म संवत 1827 गुज्जोरी, पायगा, संवत 1934 बलिदान।

39. महाधन धर्मप्रकाश जी जन्म शाके 1339 कल्याणी ग्राम बलिदान 27 जून 1938 ई०।

40. धर्मवीर महादेव 25 वर्ष की अवस्था में 14 जलाई 1938 ई० को बलिदान।

41. हुता्मा व्यंकटराव सत्याग्राही जेल में 8.4.1939 बलिदान।

42. श्री विष्णु भगवान-सत्याग्रह में 25-05-1939 को बलिदान।

43. श्री माधवराव सदाशिव राव स्वतंत्रता आन्दोलन में गुलवर्गा जेल 25 मई बलिदान।

44. श्री पाण्डु रंग जी 22 वर्षकी आयु में सत्याग्रह 25 मई 1939 देहावसान।

45. श्री हुतात्मा राधाकृष्ण जन्म 1953 हैदाराबाद ईस्लामिया बाजार 2-8-01939 को बलिदान।

नोट : कलेवर बढ़ने के कारण केवल बलिदानियो के नाम अंकित कर रहे है।

श्री लक्ष्मणराव जी, महाधन शिवचन्द, रामाकृष्ण, श्री भीमराव जी श्री माणिक राव जी, श्री सत्यानारायण, श्री महादेव, महाधन अर्जुन सिंह, श्री

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वर्णाश्रम की संक्षिप्त व्याख्या

ले०-पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोविन्द राय आर्य एण्ज सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता

वैदिक धर्म में मनुष्य जीवन के चार स्तम्भ कहलाए जाते हैं, जिनका सही रूप में प्रयोग किया जावे तो समाज, राष्ट्र व व्यक्ति विशेष की प्रगति व उत्थान होना निश्चित है। किसी समाज व राष्ट्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए ये आधार शिला है। वे है (१) वर्णाश्रम (२) पाँच महायज्ञ (३) सोलह संस्कार (४) अष्टांग योग। यदि कोई व्यक्ति समाज, राष्ट्र व पूरा विश्व इन चार कार्यों को सुव्यवस्थित ढंग से अपने जीवन में अपना लेवे तो उसकी उन्नति व समृद्धि होना आवश्यक है। यदि कोई मनुष्य अपने जीवन में अपने वर्ण तथा अपने आश्रम का कर्त्तव्य भाव व निष्ठा से पालन करे, साथ ही पंच महायज्ञों व सोलह संस्कारों का विधिवत् प्रयोग करे तथा अष्टांग योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा करते हुए समाधि अवस्था में ईश्वर के परम् आनन्द की अनुभूति करेगा और मृत्यु के बाद ईश्वर के सान्निध्य में रहकर मोक्ष के परम् आनन्द में विचरण करेगा जो जीव का मनुष्य योनि में आकर मोक्ष पाने का परम कर्त्तव्य है इसीलिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है जो जीव की अन्तिम योनि है। जिस राष्ट्र के निवासी इन चारों स्तम्भों को अपने जीवन में लागू कर लेवे। वह राष्ट्र शीघ्र ही उन्नति व समृद्धि को प्राप्त करते हुए "विश्व गुरु" के ऊँचे स्थान को सुशोभित कर सकेगा।

इस लेख में हम केवल वर्णाश्रम की ही संक्षिप्त व्याख्या करेंगे जो इस भाँति है:

वर्णाश्रम-वर्णाश्रम में दो शब्दों का समावेश है। पहला है वर्ण दूसरा है आश्रम। वर्ण समाज व राष्ट्र से सम्बन्ध रखता है और आश्रम व्यक्ति के जीवन से। वर्ण का अर्थ होता है किसी वस्तु या किसी व्यवस्था का वरण करना यानि उसको ग्रहण करके अपने समाज व राष्ट्र को सुचारू से चलाना। ईश्वर ने भी यजुर्वेद में वर्ण व्यवस्था का एक मन्त्र द्वारा संकेत किया है जिसके अनुसार ही हमारे ऋषि-मुनियों ने समाज में वर्ण व्यवस्था की स्थापना दी है। मन्त्र इसी भाँति है: ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत:।

उरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत।। यजु ३१/८८

इस मन्त्र में वर्ण चार बताए गये हैं जिससे समाज व राष्ट्र सुचारू रूप से चल सके। वे हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इन चारों वर्णों के अलग-अलग कर्त्तव्य व कर्म है। ब्राह्मणों का कर्त्तव्य है वेदों व ऋषि-मुनियों के लिखे ग्रन्थों को स्वयं पढ़े तथा दूसरे वर्णों को पढ़ावे जिससे समाज से अज्ञान दूर हो सके। इस मन्त्र में ब्राह्मण की मुख से उपमा की है। समाज के वीर, साहसी, बलवान वर्ग को क्षत्रिय वर्ण बताया गया है। इसकी उपमा हाथों से की गई है। इसका कर्तव्य है समाज से अन्याय को दूर करना। तीसरा वर्ण है वैश्य जिसका काम है व्यापार करना, खेती करना व पशु पालन करना। इन कामों से वह समाज से अभाव दूर करता है। चौथा वर्ण है शूद्र जो व्यक्ति पढ़ाने से भी नहीं पढ़े। ऊपर के तीनों काम न कर सके उसका कर्त्तव्य है ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करना जिससे तीनों वर्ण अपना-अपना कर्त्तव्य भली-भाँति कर सकें। यह वर्ण व्यवस्था आरम्भ में ऋषि-मुनियों ने मनुष्य की योग्यता के अनुसार धर्म के आधार पर बताई थी। इनमें कोई छोटा-बड़ा नहीं था। सब एक समान थे। चारों वर्णों को धार्मिक व समाजिक सुविधाएँ एक समान मिलती थी। प्राचीन काल में प्रत्येक बच्चे को गुरुकुल में पढ़ने के लिए जाना पड़ता था। विद्यार्थी की गुरुकुलीय विद्या समाप्त होने के बाद जब बच्चा अपने माँ-बाप के साथ घर जाने को तैयार होता था तब गुरूकुल का आचार्य जिसने बच्चे को कई वर्षों तक पढ़ाया था, यह उसकी योग्यता और व्यवहार को अच्छी प्रकार जान लिया था। वह उस बच्चे का वर्ण निर्धारित करता था। बच्चा अपने माँ-बाप व परिवार के साथ रहते हुए ही अपने वर्ण का पालन करता था और इस प्रकार समाज व राष्ट्र की व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहती थी। महाभारत तक यही वर्ण व्यवस्था कर्म के अनुसार चलती रही। महाभारत के महायुद्ध में अधिकतर विद्वान, पुरोहित, आचार्य योद्धा के समाप्त होने से, कम पढ़े लिखें, अविद्वान, स्वार्थी ब्राह्मणों के हाथों में समाज की पूरी बाग-डोर आ गई। इन्होंने समाज में हमेशा के लिए अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए वर्ण को जाति बतलाकर कर्म व योग्यता से नहीं जन्म से जाति मानना आरम्भ कर दिया तभी से हिन्दू जाति का पतन आरम्भ हो गया। इसीलिए आज हिन्दू जाति की यह दुर्दशा हो गई और होती जा रही है। वर्ण व्यवस्था सुधरने से ही हिन्दू जाति की प्रगति होगी। आश्रम व्यवस्था-आश्रम व्यवस्था, यह मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन को सुदृढ़ व सुखमय बनाने वाली है। इस व्यवस्था के अनुसार मनुष्य की आयु एक सौ वर्ष निर्धारित की गई है और उसको चार भागों में बांटा है। पहला ब्रह्मचर्य आश्रम। यह जन्म से लेकर पच्चीस वर्ष तक होता है। इसमें जब बच्चा पाँच या आठ साल का होने के बाद वह गुरूकुल जाकर पच्चीस वर्ष की आयु तक ब्रह्मचारी रहते हुए विद्या अध्ययन करता है। इसमें ब्रह्मचारी वेदों के साथ-साथ ऋषि-मुनि कृत सब ग्रन्थों को पढ़कर अपनी बुद्धि को और ब्रह्मचर्य का पालन करके अपने शरीर को सुदृढ़ व बलवान बनाता है। इसके बाद पच्चीस वर्ष से पच्चास वर्ष की आयु तक गृहस्थ आश्रम अपने परिवार के पालन का आश्रम होता है। इसमें वह अपने परिवार का पालन करते हुए विद्वानों व अतिथियों को अपने घर पर बुलाकर समाज व राष्ट्र की सेवा करता है। यह आश्रम सब से ज्येष्ठ व श्रेष्ठ कहलाता है कारण बाकी तीनों आश्रम इसी के ऊपर आश्रित है। इसके बाद पच्चास वर्ष से पच्चहत्तर वर्ष तक वानप्रस्थ आश्रम होता है। इसमें व्यक्ति परिवार को छोड़कर समाज व राष्ट्र की सेवा नि:स्वार्थ भाव से नि:शुल्क करता है। इस आश्रम में अपनी धर्म-पत्नी साथ भी रख सकता है और पत्नी को अपने बच्चों के साथ छोड़ कर अकेला भी वानप्रस्थी बन सकता है। इसमें व्यक्ति को जितनी भी समाजिक संस्थाएं हैं, जैसे गऊशाला, अनाथालय, गुरूकुल तथा आर्य समाज मन्दिर आदि, इनमें बिना कुछ लिए केवल भोजन पर सेवा करने का विधान है। इस आश्रम में बहुत कम व्यक्ति जा रहे हैं। यदि सभी गृहस्थी, वानप्रस्थी बनने लग जावें तो समाज की सब संस्थाएँ सुचारू रूप से चलने लगे और समाज व राष्ट्र बहुत उन्नति व समृद्धि करने लगे।

चौथा आश्रम सन्यास आश्रम है। इसकी अवधि पच्चहत्तर वर्ष से एक सौ वर्ष तक की तथा सौ से जितना अधिक तक जीवे तब तक की है। इस आश्रम में मनुष्य किसी एक परिवार, समाज व राष्ट्र में बन्ध कर नहीं रहता, वह विश्व में सभी के लिए पिता के समान बन जाता है। उसके लिए सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है और सब लोग उसके पुत्र व पुत्रियों के समान है। संसार के सभी दु:ख-सुख उस सन्यासी के दु:ख-सुख बन जाते हैं पर वह सभी दु:ख-सुखों से ऊपर उठ जाता है। उसका मुख्य कार्य बन जाता है कि वह परिवारों में जाकर सभी सदस्यों को वेदों की शिक्षा देकर उनके जीवन को सुखी बनावे। इसके बदले में वह उस परिवार में भोजन कर लेवे और इसी प्रकार उसका जीवन मृत्यु पर्यन्त चलता रहे।

वर्ण व्यवस्था में मैं लिखना भूल गया कि यह व्यवस्था एक कार्य विभाजन है। जैसे किसी व्यक्ति को भोजन खिलाते समय कई व्यक्ति उनको भोजन खिलाते है। कोई हल्वा परोसता है तो कोई पूड़ी, कोई साग, कोई नमक और कोई पानी देता है। भोजन खिलाने के बाद सब मिलकर भोजन करते है। उनमें कोई छोटा-बड़ा नहीं है। यही बात वर्ण व्यवस्था में है। इसे भी कार्य विभाजन ही समझें।

इस प्रकार चारों वर्णाश्रमों का संक्षिप्त परिचय दिया है। सुधी पाठक जान इससे लाभ उठावें तभी मेरा परिश्रम सफल होगा।

आर्य समाज के अधिकारियों-प्रधानाचार्यों से विनम्र प्रार्थना

आजकल आर्य मर्यादा साप्ताहिक पत्रिका में प्रश्नोत्तरी कालम प्रकाशित हो रहा है। मैं स्वयं कदापि विद्वान नहीं हूं। कुछ विद्वानों के सहयोग एवं उनकी अनुकम्पा से इसका प्रकाशन किया जा रहा है। इसके लिये मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने जो प्रोत्साहन दिया है उसका मैं हार्दिक आभारी हूं।

मेरी आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं शिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों से करबद्ध प्रार्थना है कि छात्र-छात्राओं को प्रेरित कर इन्हें इस प्रकार के सामान्य ज्ञान का स्मरण करवाने का प्रयास करें।

निम्न प्रकार से क्विज कार्यक्रमों को करने की कृपा करें। क्विज कार्यक्रम द्वारा वेद प्रचार विद्यार्थियों के ज्ञान तथा प्राचीन संस्कृति के ज्ञान में अभिवृद्धि होगी।

उदाहरणार्थ:

प्रश्न: आर्य समाज की स्थापना किस ने की।

स्वामी विरजानन्द, स्वामी विवेकानन्द, **स्वामी दयानन्द**

प्रश्न: हरिद्वार में स्वामी जी ने कौन सी पताका फहराई

पाखंड खंडिनी, लाल रंग की पताका, हरे रंग की पताका

प्रश्न: योगीराज श्री कृष्ण जी की धर्मपत्नी का क्या नाम था?

राधा, **रूक्मिनी**, सीता

प्रश्न: यजुर्वेद में कितने मंत्र हैं?

1976, 1875, 5977

प्रश्न ऋषि दयानन्द के अनुसार ईश्वर कैसा है?

साकार, **निराकार,** बेकार

- सुरेन्द्र मोहन तेजपाल
अधिष्ठाता साहित्य विभाग

दयानन्द मठ चम्बा का अड़तीसवां वार्षिकोत्सव एवं अठारहवें दुर्लभ शारद यज्ञ की पूर्व सूचना

आज समाज में, राष्ट्र में, राष्ट्र में ही क्या, समस्त संसार में जो उथल-पुथल हो रही है, प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं, अतिवृष्टि व अनावृष्टि के कारण जो भंयकर तबाही हो रही है, उससे चारों ओर भय का वातावरण बन रहा है। विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ मनुष्य को, समाज को जकड़ती जा रही हैं। हवा दूषित, पानी दूषित, मन दूषित, विचार दूषित, खान-पान दूषित, चारों ओर सारा का सारा वातावरण ही दूषित दर दूषित होता जा रहा है। लूटपाट, चोरी, डकैती, मारकाट, बलात्कार, व्यभिचार, अत्याचार, तथा विभिन्न प्रकार के दुर्घटनाओं के कारण जनित-चीत्कार हाहाकार, की बीभत्स ध्वनियों के कारण उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण से द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथ्वी लोक, व्याप्त होते जा रहे हैं, जिसके कारण अशान्ति, बैचेनी, भय व आशंकाओं में आम आदमी जीने में मजबूर है। न रात को नींद है, न दिन को चैन है। अधिक क्या लिखूं आप सभी इन सब बातों के प्रत्यक्षभोक्ता व प्रत्यक्षद्रष्टा हो। सभी लोग इन समस्याओं से छुटकारा पाना चाहते हैं पर इसका उपाय क्या है ? शास्त्रों के अनुसार इन सबसे छुटकारा पाने का एक ही उपाय है और वह है यज्ञ। यज्ञ ही वह एक उपाय है, यज्ञ ही वह कर्म है, जिसके सम्पादन से सभी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। नान्य पन्था:विद्यतेऽनाय इसके अलावा इनसे छुटकारा पाने का न कोई उपाय है न कोई उपचार।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धन: यज्ञ के अलावा सभी कर्म बन्धनों में डालने वाले हैं। इसलिए हे बन्धुजनों तदर्थं मुक्तसंगसमाचरथ आओ अन्य कर्मों में आसक्ति को छोड़ इस यज्ञ कर्म को अपनाकर समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, अपनों तथा अपने प्रति हमारा जो कर्तव्य जो बनता है, उसे निभाते हुए, पाप, ताप, संतापों, से छुटकारा पाकर अग्निदेव से प्रार्थना करें। यज्ञ में उपस्थित सभी देवों से प्रार्थना करें

यत्रब्रह्ममविदो यान्ति दीक्षया तपसासह दीक्षा व तप के साथ जहां जिस लोक में ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मवेता ऋषि, महर्षि लोग जाते हैं। हे अग्नि देव, हे वायु देव, हे सूर्य देव, हे चन्द्रदेव, हे सोमदेव, हे इन्द्रदेव, हे जलदेव, हे यज्ञ में उपस्थित समस्त देवों, हे ब्रह्म देव हमें भी उन लोकों को प्राप्त कराओं। बन्धुजनों यज्ञों के वह प्रकार, यज्ञों की वह विधा पूज्य चरणों ने वेदों से लेकर हमारे सामने उपस्थित कर दी हैं। जिन में से यह दुर्लभ शारद यज्ञ भी एक है। जो व्यय साध्य है, कष्ट साध्य हैं परन्तु सर्वविध कल्याणकारी हैं। इस यज्ञ को तन, मन, धन, सब प्रकार से सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए एक बार पुन: आप लोगों से आवेदन, निवेदन, करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ। इसकी पूर्व सूचना आप लोगों को दे रहा हूँ ताकि आप लोग इसके लिए पहले से ही सजग व तैयार रहें। इसमें कौन भजनीक आ रहें हैं?, कौन विद्वान, सन्यासी व उपदेशक आ रहे हैं?, इस जिज्ञासा से परे हटकर केवल व केवल यज्ञ की ही जिज्ञासा, यज्ञ की ही पिपासा लेकर आप लोग आने का मन बनाऐं। विशेष आमन्त्रित विद्वान, सन्यासी व भजनीक इनमें कोई नहीं हैं। आमन्त्रित करने पर न आए, नाम छपने पर भी दगा दे जाए तो मिथ्यावादिता के दोष से हमारा यज्ञ पहले ही दूषित हो जाएगा। इसलिए सूचना दे रहें हैं। यह सूचना सभी के लिए हैं। विद्वानों, सन्यासियों, उपदेशकों, महोपदेशकों सभी के लिए है। इनमें से जो भी आ जाऐंगें यज्ञ में उन सबका स्वागत हैं। यथा सामर्थ्य मार्ग व्यय आदि से उन्हें सम्मानित भी करेंगें।

कार्यक्रम

7 अक्टूबर से 9 अक्टूबर 2018 तक मठ का वार्षिक उत्सव मनाया जाएगा, जिसमें प्रात: 6 बजे से 10 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन होंगें। क्योंकि चम्बा में गुरुकुल बन्द हो गया है। लोगों के मन में यह धारणा घर कर गई है और इसका प्रचार भी जोरों से हुआ। उसे दूर करने के लिए गुरुकुलों में जो गतिविधियां होती हैं, जो संस्कार दिए जाते हैं, उनकी झाकियां गुरुकुल में निवास करने वाले छात्रों द्वारा एवं महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्रों-छात्राओं द्वारा, 11 बजे से 3.30 बजे तक प्रस्तुत की जाएंगी।

सायं-4 से 7 बजे तक पुन: यज्ञ व भजन प्रवचन

यह क्रम 9 अक्टूबर 2018 तक चलेगा।

दुर्लभ शारद यज्ञ

10 अक्टूबर 2018 को प्रात: 6.30 बजे से देवों पितरों के साथ-साथ, आप सभी दिव्यात्माओं के साथ मिल बैठकर-परमपिता परमात्मा का आशीर्वाद ले, पूज्य चरणों की छाया में दुर्लभ शारद यज्ञ आरम्भ हो जाएगा, जो कि पूरे दिन व पूरी रात निरन्तर चलेगा। अह: अक्तुं यज्ञम् ऋग्वेद का आदेश है, और 11 अक्टूबर प्रात: 10 बजे इसकी पूर्णाहुति होगी, मैंने-समय सारणीपूर्वक पूर्व सूचना देकर अपना फर्ज, अपना कर्त्तव्य निभा दिया है, आगे भी निभाऊंगा। अब आप लोगों की बारी है। अत: अभी से तैयारियां शुरु कर दें। इस सौभाग्यशाली अवसर पर यदि कोई यज्ञमान बनना चाहता हो तो पूर्व सूचना दे दें। अन्न, धन, मन व तन से अधिकाधिक रुप से इस महायज्ञ में सहयोग दे कर पुण्यार्जन करें। भगवान कृष्ण कहते हैं-यज्ञदान, तप: कर्म न त्याज्यं कार्यमेवतत् यज्ञ करना, तप तपना और दान देना इन तीन कर्मों को मनुष्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। इन्हें निरन्तर करते रहना चाहिए क्योंकि यह तीनों कर्म मनीषियों को भवसागर से पार कराने वाले पवित्र कर्म हैं। पावमानि मनीषिणाम् ऋग्वेद के सातवें मण्डल के छियासठवें सूक्त के ग्यारहवें मंत्र में निर्दिष्ट इस दुर्लभ शारद यज्ञ में यह तीनों ही कर्म एक साथ सम्पन्न हो जाते हैं। यह कष्ट साध्य है, इसे सम्पन्न करने के लिए तप, तपना पड़ता है। यह प्रचुर दान से सिद्ध होता है। इस यज्ञ के लिए दिया गया दान ददाति परमम् सौरव्यम् इहलोके परत्र च इहलोक में भी तथा यहां से जाने के बाद परलोक में भी अपार सुखों को देता है क्योंकि यह दान-पात्रे विधिवत् प्रति पादितम्-योग्य स्थान पर सर्वहित कार्य के लिए दिया गया है। इस लिए इस अवसर का लाभ उठाऐं। ईश्वर सबका कल्याण करे।

सुविधाओं के लिए-यदि आप लोगों में से किसी के मन में दान देने की अभिलाषा उपजती हो तो उसकी सुविधा के लिए मठ खाता नं. नीचे दे रहा हूँ। मठ को दिया गया दान ए. टी. जी. के दायरे में आता है।

दयानन्द मठ चम्बा
भारतीय स्टेट बैंक चम्बा खाता नं. 11149833806
IFSC NO-SBIN0000626, CIF NO-80932484893

खाते में राशि जमा करने के बाद-098050-22871 अथवा 01899-222871 इन नम्बरों में से किसी एक पर सूचना अवश्य दे दें ताकि रसीद भेजने में आसानी रहेगी।

आचार्य महावीर सिंह अध्यक्ष, दयानन्द मठ चम्बा हि० प्र०

पृष्ठ 2 का शेष-संस्कृत दिवस-एक पावन पर्व

काव्य प्रतियोगिता, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाना चाहिए। संस्कृत के विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

समय समय पर संस्कृत के महत्त्व को और इसकी उपयोगिता जैसे विषयों पर सैमीनार और सगोष्ठियों के माध्यम से विद्यार्थियों को इसके प्रति रुचि पैदा करने का प्रयास किया जाना चाहिए। राज्य सरकार और केन्द्र सरकार को इस भाषा को प्रफुल्लित करने के लिए 'संस्कृत दिवस' के अवसर पर इस भाषा के उत्थान हेतु नई परियोजनाएं घोषित करनी चाहिए। केवल औपचारिकता के नाम पर 'संस्कृत दिवस' मनाना केवल समय और धन की बर्बादी करना है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए। भारत के है तीन आधार 'संस्कृत संस्कृति और संस्कार अगर हमें अपनी पहचान को विश्वभर में सुदृढ़ करना है और अपनी संस्कृति के अस्तित्व को बचाना है तो संस्कृत भाषा में रचित साहित्य और संस्कृति का भावी पीढ़ी तथा पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए। इस अमूल्य निधि के संरक्षण हेतु 'संस्कृत दिवस को श्रद्धापूर्वक मनाने और इस भाषा के प्रति सद्भावनापूर्वक समर्पण भाव से भावी पीढ़ी को अग्रसरित करने की आवश्यकता है। तभी 'संस्कृत दिवस' सार्थक सिद्ध होगा।

पृष्ठ 5 का शेष-बलिदान देने वाले कुछ आर्य...

गोविन्दराव नलन्ना, श्री गोबिन्दराव लक्ष्मणराव नलगीर जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, शहीद पुरूषोत्तम दास मंगनलाल शाह, महाधन खण्डेराव गण्पतराव जगताप, महाधन सदाशिव राव पाठक, महाधन रामनाथ, महाधन नाथूराम जी, वीरवर नारूमल जी, महाधन नेवदराम, श्री भैरो सिंह जी, आर्य वीर, श्री मेघराज जी, श्री जयराम, महाधन राधाकृष्ण, श्रीयुत बृजलाल आर्य, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, महाराज, श्री पं वंशीलाला व्यास, श्री स्वामी योगानन्द जी सरस्वती, श्रद्धेय स्वामी ब्रह्ममानन्द जी महाराज, श्री पं० विश्वासदास जी, आर्यवीर सुखराम जी, महात्मा सुमेर सिंह जी, चौ० माईघन, स्वामी नित्यानन्द जी, श्री सुबेदार शिवलाल जी आर्य, श्री शेर सिंह जी, वीर शहीद सुमेर सिंह जी, प्रो० किशोरीलाल जी, श्री साधु अजरानन्द जी, विद्वान ब्रह्मचारी पं विक्रम जी, वीर ब्रह्मचारी पं हरिशरण जी, ब्र० नरदेव, ब्र० विद्यावृत जी, ब्र० बृहस्पति जी, महाशय धर्मपाल जी आदि-आदि।

निवेदन :

आर्य समाज के राष्ट्रीय, सामाजिक उत्थान में बलिदानियों की लम्बी श्रृंखला है जिसका एक बहुत बड़ा ग्रन्थ बन सकता है। गहन स्वध्याय से मुझे यह लगा कि आर्य जगत में उक्त बलिदानियों को बहुत कम जानते है। स्वामी ओमानन्द जी ने अधिकांश उनका ही नाम दिया है आर्य वीरों के मुख्य 2 बलिदानियों को तो सभी जानते है। स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर उक्त आर्य बलिदानियों को हम शत-शत नमन करते है।

श्री कृष्ण से सम्बन्धित प्रश्नोतरी

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से तैयार प्रश्नोत्तरी। आशा है आर्य मर्यादा के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

प्र.1–श्री कृष्ण जन्म कब हुआ?
उत्तर– भाद्रपद रोहिणी अष्टमी।

प्र.2 –श्री कृष्ण के पिता का नाम?
उत्तर–वसुदेव।

प्र.3–श्री कृष्ण की कुल आयु कितनी थी?
उत्तर–126 वर्ष।

प्र.4–श्री कृष्ण की माता का नाम?
उत्तर–देवकी।

प्र.5–श्री कृष्ण से पहले कंस ने देवकी की कितनी संतानों को मार दिया था ?
उत्तर–सात

प्र.6–श्री कृष्ण के पितामह का नाम?
उत्तर–शूरसेन।

प्र.7–श्री कृष्ण के नाना का नाम?
उत्तर–उग्रसेन।

प्र.8–श्री कृष्ण का जन्म वंश?
उत्तर–यदुवंश।

प्र.9–श्री कृष्ण का जन्म कहां हुआ?
उत्तर– कंस के कारागार में।

प्र.10–कंस कौन थे?
उत्तर–श्री कृष्ण के मामा।

प्र.11–कंस ने श्री कृष्ण के माता पिता को क्यों कैद कर रखा था?
उत्तर–देवकी की आठवीं सन्तान द्वारा अपने वध की आकाशवाणी सुन कर।

प्र.12–श्री कृष्ण को कारागार से किसने मुक्त करवाया?
उत्तर–बाबा नंद ने।

प्र.13–नंद श्री कृष्ण को कहां लेने गए?
उत्तर–गोकुल में।

प्र.14–नंद की पत्नी का नाम?
उत्तर–यशोदा।

प्र.15–गोकुल में श्री कृष्ण का पालन पोषण किसने किया?
उत्तर–नंद एवं यशोदा ने।

प्र.16–मथुरा से गोकुल आते समय नंद एवं श्री कृष्ण ने कौन सी नदी पार की थी?
उत्तर–यमुना।

प्र.17–श्री कृष्ण की सौतेली माता का नाम?
उत्तर–रोहिणी।

प्र.18–श्री कृष्ण के सौतेले भाई-बहन कौन थे?
उत्तर–बलराम एवं सुभद्रा।

प्र.19–श्री कृष्ण एवं बलराम ने किससे शिक्षा प्राप्त की थी?
उत्तर–गर्गाचार्य एवं गुरू सान्दीपनी से।

प्र.20–श्री कृष्ण के बाल सखा कौन थे?
उत्तर–सुदामा।

प्र.21–बाबा नन्द क्या काम करते थे?
उत्तर–गऊंए चराते थे।

प्र.22–श्री कृष्ण का बचपन कहां व्यतीत हुआ?
उत्तर–वृन्दावन में।

प्र.23– शैशव काल में श्री कृष्ण के जन्म का पता चलने पर कंस ने उन्हें मारने का क्या प्रयत्न किए?
उत्तर–पूतना धाय और कालिया सर्प द्वारा।

प्र.24–श्री कृष्ण का प्रिय वाद्य यन्त्र कौन था?
उत्तर–बांसुरी।

प्र.25–श्री कृष्ण का प्रिय आहार क्या था?
उत्तर– दूध एवं माखन।

प्र.26– कंस कौन थे?
उत्तर–देवकी के भाई और श्री कृष्ण के मामा।

प्र.27–श्री कृष्ण को मधुसूदन क्यों कहा जाता है?
उत्तर–राक्षस मधु का वध करने के कारण।

प्र.28–श्री कृष्ण को गोपाल क्यों कहा जाता है?
उत्तर–गोरक्षक और गोपालक होने से।

प्र.29–श्री कृष्ण वृन्दावन में क्या करते थे?
उत्तर–गऊंए चराते थे।

प्र.30–श्री कृष्ण एवं बलराम ने किन दो पहलवानों को मल्ल युद्ध में परास्त किया?
उत्तर–चाणूर एवं मुष्टिक को।

प्र.31–श्री कृष्ण ने मथुरा लौट कर किसकी हत्या की?
उत्तर–कंस की।

प्र.32–श्री कृष्ण की पत्नी का नाम क्या था?
उत्तर– रूक्मिणी।

प्र.33–श्री कृष्ण के पुत्र का क्या नाम था?
उत्तर–प्रद्युम्न।

प्र.34–श्री कृष्ण के श्वसुर का नाम क्या था?
उत्तर–भीष्मक।

प्र.35–पाण्ड़वों के साथ श्री कृष्ण का क्या सम्बन्ध था?
उत्तर–फुफेरे भाई थे।

प्र.36–श्री कृष्ण कौन से शस्त्र को चलाने में सिद्धहस्त थे?
उत्तर–सुदर्शन चक्र।

प्र.37– युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्री कृष्ण ने कौन से काम की जिम्मेदारी ली?
उत्तर– ब्राह्मणों और अतिथियों के हाथ पांव धोने का काम।

प्र.38–राजसूय यज्ञ के अवसर पर सर्वप्रथम अर्घ्य किसे प्रदान किया गया?
उत्तर– श्री कृष्ण को।

प्र.39– श्री कृष्ण किस वर्ण के थे?
उत्तर– श्याम वर्ण।

प्र.40–कंस की हत्या कर मथुरा का राज्य श्री कृष्ण ने किसे दिया?
उत्तर– कंस के पिता उग्रसेन को।

प्र.41–सन्धि को जाते समय श्री कृष्ण ने दुर्योधन को छोडकर किसके घर भोजन किया?
उत्तर–महात्मा विदुर के पास।

प्र.42–महाभारत युद्ध रोकने के लिए श्री कृष्ण ने कौन सी भूमिका निभाई?
उत्तर– दूत की।

प्र.43– श्री कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से किसका सिर धड़ से अलग कर दिया?
उत्तर– शिशुपाल का।

प्र.44–श्री कृष्ण की बहन सुभद्रा का अपहरण किसने किया था?
उत्तर–अर्जुन ने।

प्र.45–युद्ध के बिना सुई की नोक के बराबर भी भूमि देने को तैयार नहीं, शब्द किसने किसको कहे?
उत्तर– दुर्योधन ने श्री कृष्ण को कहे।

प्र.46–श्री कृष्ण की सहायता से अर्जुन ने किस वन को जलाया था?
उत्तर–खाण्ड़व वन को।

प्र.47–श्री कृष्ण कहां के राजा थे?
उत्तर– द्वारिका के।

प्र.48–महाभारत में कौन श्री कृष्ण से सहायता प्राप्त करने गए थे?
उत्तर–अर्जुन और दुर्योधन।

प्र.49–अर्जुन ने सहायतार्थ श्री कृष्ण से क्या मांगा?
उत्तर– स्वयं श्री कृष्ण को।

प्र.50–श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में क्या संकल्प लिया?
उत्तर–मैं युद्ध में शस्त्र नहीं उठाऊंगा।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org

आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।